

## क. जीवन के तूफ़ान

- ❖ आधी रात में गलील की झील को पार करना, यहाँ तक कि तूफ़ान के बीच भी, पतरस, अन्द्रियास, याकूब और यूहन्ना जैसे अनुभवी मछुआरों के लिए कोई नई बात नहीं थी।
- ❖ फिर भी, उस तूफ़ान ने उन्हें घेर लिया। हवा ने लहरों को इतना उग्र कर दिया कि नाव पानी से भरने लगी और उनका जीवन खतरे में पड़ गया। तब उन्हें एहसास हुआ... यीशु कहाँ है? क्या वह सो रहा है? वह हमारी मदद क्यों नहीं कर रहा? क्या उसे हमारी परवाह नहीं है? (मरकुस 4:35-38)।
- ❖ हमारे जीवन में भी तूफ़ान आते हैं। हम यीशु से सहायता माँगते हैं, पर ऐसा लगता है जैसे वह सो रहा हो। हमें उसकी उपस्थिति महसूस नहीं होती। लेकिन वह वहाँ होता है।
- ❖ उस क्षण की प्रतीक्षा करें जब वह हमारे तूफ़ान को डाँटेंगा: “शान्त रह, थम जा!” (मरकुस 4:39)। वह हमारी चिन्ता करता है (1 पतरस 5:7)। वह हमारे तूफ़ानों को शांत कर सकता है। जब वह ऐसा करे, तो उसकी स्तुति करना न भूलें (मरकुस 4:40-41)।

## ख. बीमारियाँ

- ❖ बारह वर्षों तक रक्तस्राव (खून बहने की बीमारी) से पीड़ित रहने और किसी भी वैद्य से चंगा न हो पाने के कारण वह स्त्री निर्धन और निराश हो गई थी (मरकुस 5:25-26)। आज भी कुछ ऐसे देश हैं जहाँ मुफ्त चिकित्सा सुविधा उपलब्ध नहीं है, और यह कहानी अब भी वास्तविकता हो सकती है।
- ❖ किसी न किसी रूप में, हम सभी ऐसी परिस्थितियों का सामना कर सकते हैं जहाँ बीमारी हमें बाँध लेती है और घुटन पैदा करती है, और हमें कोई राहत नहीं मिलती।
- ❖ उस स्त्री ने यीशु में समाधान देखा, और उसके विश्वास ने उसे चंगा किया (मरकुस 5:27-29)।
- ❖ हमें विश्वास रखना चाहिए कि यीशु कुशल डॉक्टरों के माध्यम से हमें चंगा कर सकता है, या सीधे हमारे लिए आश्चर्यकर्म कर सकता है।
- ❖ हर स्थिति में, यीशु हमें आमंत्रित करता है कि हम अपने सारे बोझ और चिंताएँ उस पर छोड़ दें (मत्ती 11:28-30)।

## ग. आपदाएँ

- ❖ युद्ध, हिंसा और प्राकृतिक आपदाओं ने अय्यूब के जीवन को पूरी तरह बदल दिया (अय्यूब 1:13-19)। हम सभी किसी न किसी प्रकार की आपदाओं के संपर्क में आते हैं, चाहे वे प्राकृतिक हों या इस संसार में व्याप्त बुराई के कारण उत्पन्न हुई हों।
- ❖ हम कैसे प्रतिक्रिया देंगे? अय्यूब ने कैसे प्रतिक्रिया दी?
  - उसने न तो परमेश्वर को दोष दिया और न ही उसे ठुकराया।
  - वह पूरी शक्ति से परमेश्वर से चिपका रहा।
  - उसने सबसे अंधकारमय क्षणों में भी भरोसा रखा।
  - उसने अपनी दृष्टि एक महिमामय भविष्य पर टिकाई (अय्यूब 19:25-27)।
- ❖ यदि हम हिम्मत न हारें, तो हम देखेंगे कि हमारी सबसे कठिन परीक्षाओं में भी परमेश्वर हमेशा हमारे साथ होता है। वह हमसे प्रेम करता है और हमें सामर्थ्य देता है कि हम कमजोरी से शक्ति, निराशा से साहस, और आपदा से आशा प्राप्त करें (योएल 3:10; रोमियों 5:3-5)।
- ❖ यदि आप कठिन समय से गुजर रहे हैं, तो इस बात पर मनन करें कि परमेश्वर का प्रेम और आपकी देखभाल ही आपके जीवन की सबसे सुरक्षित और स्थिर चीज है।

## घ. निराशाएँ

- ❖ दृष्टिकोण: यीशु वह मसीह हैं जो इस्राएल को छुटकारा देगा। वास्तविकता: वह मर चुका है (लूका 24:18-21)। उनकी निराशा इतनी गहरी थी कि वह यीशु के पुनरुत्थान के सबसे स्पष्ट प्रमाण को भी स्वीकार नहीं कर सके (लूका 24:22-24)।
- ❖ धैर्यपूर्वक, यीशु ने उनकी आशा को फिर से जागृत करने में सहायता की। अंत में “उनकी आँखें खुल गईं” (लूका 24:31), और वे दौड़कर उन लोगों को उत्साहित करने गए जो अभी भी निराश थे (लूका 24:32-35; 2 कुरिन्थियों 1:4)। हम उनके अनुभव से क्या सीख सकते हैं?
  - हमें संदेह को अपने मन में जड़ नहीं जमाने देना चाहिए।
  - हमारी निराशाओं में भी यीशु हमारे साथ चलता है।
  - यदि हम उसे अनुमति दें, तो वह हमारी उलझनों को दूर करेगा।
  - यीशु हमारी वास्तविकता को हमसे बेहतर जानता है।

## ड. यीशु को देखें

- ❖ जब एलेन जी. व्हाइट गहरी निराशा में थीं, तब उन्हें एक दर्शन हुआ जिसमें उन्होंने यीशु को देखा।
- ❖ उन्होंने समझ लिया कि वह उनकी हर परिस्थिति को भली-भाँति जानता है। एक समय यीशु ने अपना हाथ उनके सिर पर रखकर उनसे कहा, “डरो मत।”
- ❖ उन्होंने महिमामय दृश्य देखे, और उन्हें ऐसा प्रतीत हुआ मानो उन्होंने स्वर्ग की सुरक्षा और शांति को प्राप्त कर लिया हो।
- ❖ इस दर्शन ने उन्हें आशा और विश्वास दिया, और यह निश्चितता दी कि वह परमेश्वर पर भरोसा कर सकती हैं।